Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol.,-05, Issue-I, February 2014

समकालीन महिला कथाकार एवं उनका प्रतिपाद्य

डॉ. कुमुद सिंह:डोम्बीवली, ठाणे

मानव इतिहास संघर्षो का इतिहास रहा है। सदी-दर सदी इन संघर्षो की पृष्ठभूमि बदलती रही है। साम्राज्यवाद के कारण देश-देश के बीच युध्द लड़े गये। पूँजीवाद के कारण सामंत एवं सर्वहारा वर्ग के बीच संघर्ष हुए। धार्मिक आस्था के कारण जातियों के बीच मन-मुटाव उत्पन्न हुए। वर्तमान सामाजिक फलक पर संघर्ष का जो चित्र उभरा है, वह निश्चित रुप से लिंगभेद का है। सामाजिक आर्थिक धार्मिक हितों के लिए लड़ी गई लड़ाईयों से यह संघर्ष कई स्तरों पर अलग है। लिंगभेद का यह संघर्ष आधी दुनिया द्वारा, आधी दुनिया से, आधी दुनिया की 'अस्मिता एवं अस्तित्व' के लिए है। डॉ.प्रभा खेतान के मतानुसार-

''सत्ता, सेक्स और स्त्रीकरण के बीच संबंध स्थापित करते हुए हम कह सकते हैं कि - स्त्री कामना की राजनीति अपने प्राचीन रुप में मानव संघर्ष का सबसे आदिम उदाहरण है, दलन का सबसे गहरा मुद्दा स्त्री-पुरुष का यह संघर्ष है, जो कि मानव सभ्यता में एक बेमिसाल, उदाहरण है''

स्त्री पुरुष संघर्ष का मुद्दा प्राचीन है। शोषण, उत्पीड़न, अन्याय और अत्याचार की उम्र सहनेवाले की दुर्बलता में निहित है। आज की स्त्रीने 'सहना' छोड़कर निर्भिकता से 'कहना' सीख लिया'है।'कहने की प्रक्रिया का श्रीगणेश साहित्य के माध्यम से होना अपने आप में एक उपलब्धि है। साहित्य में स्त्री 'अपने जैसियो' से कहती है । जिससे उसके'कहने' का दायरा सामाजिक, राष्ट्रीय एवं अंन्तर्राष्ट्रीय सीमा तक पहुँच जाता है। हिन्दी साहित्य की भूमिका में हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं- ''साहित्य का स्पिरिट ही बदल गया है मनुष्य की वैयक्तिकता ने निश्चित रुप से साहित्य में स्थान पाया है नारी ने अपने समानाधिकार के दावे के साथ साहित्य में प्रवेश किया हैं और दृढ़ तथा उदात्त कंठ से पिछली शताब्दी की कल्पित अवास्तविक नारी - मूर्ति के चित्रण का प्रतिवाद किया है।

प्रेमचंद पूर्व काल से ही पुरुष साहित्यकारों ने नारी की स्थिती के वास्तविक चित्रण की कमान सँभाल ली थी। आरंभिक रचानाकारों ने सामाजिक मर्यादा के दायरे में रहकर स्त्री को समझने का

www.gnrws.in

Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol.,-05, Issue-I, February 2014

प्रयास किया परंतु समय के साथ-साथ सभी मर्यादाएँ टूटने लगीं। हिन्दी के प्राय: सभी महत्वपूर्ण उपन्यास नारी जीवन को केन्द्र में रखकर लिखे जा रहे थे परंतु स्त्रियों की भागीदारी लेखन क्षेत्र में कम ही थीं। मीरा से महादेवी के बीच किसी महिला रचनाकार का प्रभाव नहीं था परंतु फिर भी महिला लेखन के आंरभिक समय में शैल कुमारी देवी (उमा सुन्दरी) गोपालदेवी(दयावती) रुक्मणी देवी(मेम और साहब) यशोदा देवी (सच्चा पति) प्रेमगिरिजा देवी(कमला कुसुम) कुटम्ब प्यारी देवी (हृदय का ताप) ज्योतिर्मयी ठाकुर(मधुबन) तेजरानी दिक्षित (हृदय का कांटा) पुर्णशशि देवी(रात के बादल) इत्यादी लेखिकाएँ अपने विचारों को कलमबध्द करने का प्रयास अवश्य कर रहीं थी।

वास्तविक जीवन की कठिनाइयों को झेलकर भी अच्छे आदर्शों का निर्वाह करनेवाले स्त्री-पुरुष चरित्रों का अभाव भारतीय साहित्य में नही है। ऐसे महान चरित्र ही भारतीय संस्कृति की आत्मा है। परंतु समाज व वैश्विक पृष्ठभूमि में बदलाव आया है इसमें संदेह नहीं है। आदर्शो की परिभाषाएँ भी बदली हैं और उनका स्वरुप भी। पुरानी मान्यताओं को नये संदर्भों में स्थापित करने के लिए इनमें फेरबदल आवश्यक है। परंतु सामाजिक जड़ता इसकी अनुमति आसानी से नहीं देती। इन्हीं परिस्थियों के फलस्वरुप विद्रोह और संघर्ष का जन्म होता है। ये संघर्ष और विद्रोह पहले कागज पर उकेरे जाते हैं जो बाद में समाज को प्रभावित करते हैं।अर्थात साहित्य में वास्तविक जीवन का जो काल्पनिक रुप है वह वास्तविक जीवन का 'रिहर्सल' ही है। रुढ़िवाद के संदर्भ में बेकन कहते हैं - किसी प्रथा के समय से आगे तक घसीटना उतना ही विक्षोभकारी है जितना की नवीकरण : और जो लोग प्राचीन काल के प्रति अत्याधिक आदर रखते हैं, वे नये के लिए केवल उपहास के पांत्र होते हैं। आधुनिक नीति एवं सुविधाओं के कारण स्त्री शिक्षा का अनुपात बढ़ा हैं। आर्थिक क्षेत्रों में बड़ी संख्या में महिलाएँ अपनी जगह बना रही है। आचार-विचार के आधुनिकीकरण ने रुढ़िवादिता को चोट अवश्य पहुँचाई है। भूमंडलीकरण के दौर में मनुष्य के परिवेश का प्रत्येक पहलू बदल चुका है ऐसे में स्त्री अथवा पुरुष का परंपरावादी ढाँचे से निकलना समय की माँग है।समय के साथ चलने के लिए रुढ़ियों का त्याग एवं नवीनीकरण का साथ देना ही पड़ता है। आज की स्त्री ने स्थापित भूमिकाओं से निकलकर नये क्षेत्रों में पदार्पण किया है। स्त्री ने अपनी कार्यकुशलता एवं कार्यक्षमता का परिचय धरती से अंतरिक्ष तक दिया है। साहित्य के क्षेत्र में महिलाओं का आगमन स्वतंत्रता से पहले हो गया था परंतु लेखन काय। परंपरा

www.ghrws.in

Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol.,-05, Issue-I, February 2014

एवं आदर्शवाद से प्रभावित था। आधुनिक महिला कथाकारों ने अपने लेखन में स्त्री की विविशता, उसका दर्द, घुटन इत्यादी को जगह दी। अज्ञेय जी द्वारा संपादित सप्तको में शकुंतला माथुर (१९५१) कीर्ति चौधरी (१९५९) तथा सुमन राजे (१९७९) नामक कवयित्रियों ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की। कीर्ति चौधरी द्वारा रचित एक कविता दृष्टव्य है - जिसमें एक कोमलांगी, भावुकमना स्त्री के 'इस्पात' बनने की प्रक्रिया का आरंभ सहज देखा जा सकता है। खीज कर ही सही वह निर्णय लेती है। अपनी दशा पर कविता लिखती है। आत्म जागृति का शुभारंभ इसी प्रकार होता है -

वह गीत कि जिसका दर्द देख कर

आँखे सब भर आयी थीं,

मुझमें उसकी अनुभूति महज

घर के झगड़ो से उपजी थी।

वह अडिग विचलित पन्थ ज्ञान

जिसके उपर

भावुक ह्दयों की श्रध्दा उमड़ी मँडरायी

बस विवश, पराजित तकिये मे मुँह गाड

खीज कर लिया गया।

वे स्थितियाँ जो रोज तुम्हारे इसके, उसके जीवन में आती रहती हैं,

मेरी भी हैं।

कीर्ति चौंधरी की कहानियों में भी यही भाव पाठक को द्रवित करते हैं। कीर्ति चौंधरी की कहानी 'प्रकाशों' की नायिका प्रकाशो का विवाह दुहाजु वर से हुआ है। वह पति की उपेक्षा का

www.ghrws.in

Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol.,-05, Issue-I, February 2014

शिकार है। परंतु घुट-घुटकर जीने की बजाय वह जीवन के नये आयाम ढूँढने में विश्वास रखती हैं।वह सोचती है - वह क्यों किसी के पीछे जले-मरे।उसके भी ह्दय में ऊमंगे हैं, उत्साह है, आकांक्षाए हैं।क्यो न उन्हे पूरा करे। एक व्यक्ति के पीछे कुढ़कर जान देने के लिए की क्या उसका जन्म हुआ है?"

समकालिन कहानियों में लेखिकाओं ने स्त्री की वास्तविक स्थिति को पहचानकर उसके कारणों की तलाश की। 'स्व' के प्रति उनकी सचेतना बढ़ी और इसीलिए दबी-सकुची रहनेवाली स्त्रियों ने प्रतिकार के स्वर बुलंद किए। परंपरागत बंधनों से निकलकर 'स्वतंत्रता' का सपना इन लेखिकाओं की नायिकाओं ने देखा। शुरुवात उसी चारदीवारी से हुई जहाँ वे सबसे अधिक सताई गई थीं। स्त्री का त्याग ही कुंटुंब की खुशहाली का आधार था सो वहीं से उन्होंने परिवर्तन लाना आरंभ किया।

नारी विमर्श के विविध मुद्दों की वास्तविक स्थितियों को उद्घाटित करने का श्रेय समकालीन कहानी लेखिकाओं को जाता है। उषा प्रियंवदा, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, राजी सेठ, मृदुला गर्ग, दीप्ति खंडेलवाल, ममता कालिया, शशिप्रभा शास्त्री,सूर्यबाला,चित्रा मुद्गल, मृणाल पांडे,नासिरा शर्मा, निरुपमा सेवती, माणिका मोहिनी, शिवानी, मालती जोशी, कुसुम अंसल इत्यादी लेखिकाओं ने उस दर्द की अनुभूति को शब्दबध्द किया जो व्यवस्था से उन्हे मिला था। वैसे बंग महिला के नाम से 'दुलाईवाली' कहानी लिखनेवाली श्रीमती राजेंद्र बाला घोष को प्रथम हिन्दी लेखिका माना जाता है। महिला उपन्यास लेखिकाओं में 'उषादेवी मित्रा' का नाम उल्लेखनीय है। डॉ. राजु बागलकोट के अनुसार - ''उषा देवी मित्राजी ने अपने साहित्य में प्रेम भावना के उदात्त स्वरुप को आधार बनाकर लिखा है। नारी त्याग और बलिदान से प्रेरित होकर प्रेम की निष्ठा को बनाये रखती है। उनके संपूर्ण साहित्य में कोमल भावनाओं का अंकन हुआ है। पढ़ते वक्त पाठक को शरतचन्द्र का स्मरण कराती है।

महिला कथाकारों के कथ्य पर दृष्टी डालें तो त्याग, बलिदान, प्रेम तथा लज्जा जैसे भाव का क्रमश: संघर्ष और विद्रोह में परिवर्तन दिखाई देता है। साहित्य की कथा नारियाँ बेबाकी से अपनी बात

www.gnrws.in

Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol.,-05, Issue-I, February 2014

कहती हैं। प्रेम, विवाह, सेक्स, संपत्ति, पद, प्रतिष्ठा, मातृत्व आदि सभी मान्यताओं को खंडित करती हैं। वे आज 'व्यक्तिगत विकास' को प्राथमिकता देते हुए पारिवारिक एवं सामाजिक विकास की पक्षधर है। व्यक्तिगत स्वतंत्रता, स्वाभिमान एवं विकास के मूल्य पर वे समाज निर्माण को नकारती हैं। इसी संदर्भ में लेखिका सूर्यबाला कहती हैं- पिछले पाँच दशको में निरुपित नारी का सूक्ष्मता से आकलन, करे तो पहले साहित्य की नारी आगे बढ़ी, ज्यादा बोल्ड हुई, पीछे समाज की।

साहित्य की नारियों में प्रेम, विवाह और सेक्स को लेकर जो खुलापन आया है उसने साहित्य जगत को अचंभित किया है। परंतु यह खुलापन समय की माँग है।यदि वह निर्भिक होकर अपनी बात नहीं कहती तो उसके मानसिक द्वंद्व का पता लगाना असंभव हो जाता। मानसिक द्वंद्व का सीधा प्रभाव रिश्तों पर पड़ता है। दांपत्य संबंध इसकी चपेट में सबसे पहले आता है। चित्रा मुद्गल की कहानी 'मामला आगे बढ़ेगा अभी' की श्रीमती सक्सेना वैवाहिक संबंधो के खोखलेपन पर व्यंग करते हुंए कहती हैं- ''मुझे तो बस कहने भर को घर मिला है। यह सारी मौज-मस्ती तो वक्त काटने की है..... साब कहने को हस्बैंड हैं और मैं कहलाने की बीवी.....।

ये कथा नारियाँ जरबन संबंधो को ढ़ोने में विश्वास नहीं रखती। प्रेम और सहयोग के अभाव में पलते रिश्तों को ये बोझ समझती हैं। संवेदनहीन संबंधो को तोड़ने की पहल करती ये स्त्रियों अपने लिए नए रास्ते तलाशती है। मन्नू भंडारी कृत 'आपका बंटी' की 'शकुन' ऐसी ही स्त्री है। दांपत्य संबंध को बेवजह घसीटने के जगह वह 'तलाक' लेना बेहतर समझती है। पति का दूसरा विवाह हो जाने पर वह भी अपने लिए सुयोग्य वर अर्थात डॉक्टर को अपनाकर जीवन नए सिरे से शुरु करती हैं।

'एक इंच मुस्कान' की अमला, अमर को पत्र लिखकर कहती है - ''विवाह केवल एक बंधन है, एक फंदा है, जो प्यार का गला घोंट देता है, विवाह कर लोगे तो मर जाओंगे, वह मर जाएगी, तुम लोंगों का प्यार मर जाएगा। तुम्हारे जीवन में रह जाएगा एक मानसिक तनाव और उसके जीवन में रह जाएगी अविरल अश्रुधारा।

www.gnrws.in

Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol.,-05, Issue-I, February 2014

प्रेम और विवाह के प्रति यह दृष्टिकोण स्त्री के लिए नितांत नया हैं। दांपत्य संबंधो में बंधकर प्रतिभा एवं श्रम को व्यर्थ में गँवाने से बेहतर है व्यक्तिगत प्रगति की दिशाएँ तलाश करना। बँधी-बँधाई व्यवस्था में फँसकर अपने सुखों को होम करनेवाली स्त्रियां अब साहित्य में कम ही हैं। छिन्नमस्ता (डा,प्रभा खेतान) की प्रिया उन्हीं में से एक हैं। पत्नीत्व और मातृत्व को तिलांजलि देकर वह व्यवसाय क्षेत्र में अपने कदम रखती है परिवार के लिए आत्मनिर्भरता का त्याग नहीं करती, वह सोचती है -'' नरेंन्द्र की व्यवस्था के सामने हार मानने का अर्थ यह नहीं हुआ कि तुम सारे मुकामों पर हार गई। उसे वहीं छोड़ दो जहाँ वह है। तुम खुद अपनी व्यवस्था बन सकती हो, अपन जमीन।''

बहुचर्चित लेखिका मृदुला गर्ग ने अपने उपन्यासों के माध्यम से काम संबंधों की गोपनीयता से पर्दा हटाया है। चित्तकोबरा उनका चर्चित उपन्यास है जिसकी भावभूमि भोग-विलास ही है। यह वह क्षेत्र है जहाँ स्त्री को वस्तु की तरह इस्तेमाल किया जाता रहा हैं परंतु कथा नारियाँ अब 'स्वान्तसुखाय' के लिए अपने आप को उपलब्ध कराती हैं, किसी मजबूरी में नही। चित्तकोबरा की भूमिका में लेखिका मृदुला गर्ग लिखती हैं -'' जहाँ तक प्रेमहीन सेक्स का सवाल है, जिस संबंध में संभोग के क्षणों में मन नहीं, शरीर ही प्रमुख रहे, वह संबंध और जो हो प्रेम का नहीं हो सकता। प्रेमहीन शरीर संबंध जो भारतीय विवाह पध्दति की स्वाभाविक स्थिती है, भयानक आत्मपीड़न के अलावा कुछ नही हैं।'' इसी आत्मपीडन से संघर्ष करती कई कथा नारियाँ हैं - प्रिया (छिन्नमस्ता), रीतु (अपने, अपने चेहरे),सारंग (चाक) वाना (अन्तर्वंशी) इत्यादी । परंतु यें स्त्रियों पुरुष सत्ता की चालबाजी का शिकार होने के बदले उनसे मुक्त हो जाने के लिए हर खतरा उठाती हैं। समाज, परिवार, धर्म सभी से लड़ती हैं। क्योंकि वह मातृत्व व पत्नीत्व के पीछे छुपे पुरुष स्वार्थं को पहचानती हैं। कठ गुलाब की आसीमा कहती हैं - ''दया और पुरुष पर?वह संतान चाहता है तो स्वार्थ पूर्ति के लिए । अहम की तुष्टि, वंश की वृध्दि अनित्य को नित्य बनाने का मोह।''

आज की स्त्री, माता, पत्नी, बहन, पुत्री बनकर पुरुष के हाथों की कठपुतली नहीं बनना चाहती, न ही शरीर सौष्ठव के बल पर प्रेम पाना चाहती है। स्त्री, लड़की, महिला संबोधनों से परे वह अपनी पहचान एक आम व्यक्ति के रुप में चाहती हैं। ममता कालिया के अनुसार - ''आत्मभिव्यक्ति

www.ghrws.in

Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol.,-05, Issue-I, February 2014

की आकांक्षा के साथ-साथ आत्म सजगता का रेखांकन पिछले पचास वर्षों के महिला लेखन का केंद्र बिन्दु रहा है।''

स्त्री जीवन का शायद ही कोई पहलू महिला रचनाकारों की दृष्टि से बच पाया है। स्त्री -पुरुष संबंधों के विविध रुप, राजनैतिक सजगता, आर्थिक आत्मनिर्भरता,समलैंगिकता,यौन स्वच्छंदता श्रम की भागीदारी, ऐच्छिक मातृत्व, प्रेम का भौतिक स्वरुप, शोषण तथा अधीनस्थता की स्थिती से नकार सभी कुछ लिख कर प्रस्तुत किया जा रहा है। इन उपन्यासों का कथ्य विवरणात्मक एवं मनोविश्लेषणात्मक है। कृष्णा सोबती कृत सूरजमुखी अंधेरे के इसी प्रकार की रचना है। 'रती नामक स्त्री बलात्कार की मानसिक कुंठा से निकलने के लिए कई पुरुष साथियों में से 'सच्चे प्रेमी' को तलाशने में सफल होती हैं।वह अपना प्रेम पाने के लिए प्रेमी की विवाहित जिंदगी ध्वस्त नहीं करना चाहती। वह दिवाकर से कहती है -''तुम पुल के नीचे बहते हो और अपने किनारों से बँध हो। ओर मैं.... पुल पर गुजर भर जाने को हूँ।''

नारीवाद ने प्रेम और विवाह को स्त्री के नजरिए से देखने की तकनीक जुटाई हैं। स्त्री प्रेम और विवाह के भावनात्मक जाल में इस तरह से जकड़ दी जाती है कि सबकुछ जानते हुए भी वह कुछ नहीं कह पाती। आधुनिक कथा साहित्य में स्त्री की इस उलझन पर सर्वाधिक प्रकाश डाला गया हैं। लेखिका सूर्यबाला के दो उपन्यास इस स्थिती को भली भांति चित्रित करते हैं। मेरे संधिपत्र (१९७२) तथा 'यामिनी कथा((१९९१) की नायिकाएँ विवाह, प्रेम तथा पुनर्विवाह से गुजरती हैं इसी संदर्भ में डा.राजन नटराजन पिल्लै लिखती हैं -'' उन्होंने (सूर्यबाला) अपनी शिवा (मेरे संधिपत्र) और यामिनी (यामिनी कथा) के मन में पति-पत्नि संबंधो को लेकर और बाद में एक प्रेमी और दुसरा पति निर्मित कर जो अंतर्द्वंद्व दिखाया है वह आधुनिक स्त्रीवादी सोच की ही देन है।''

चित्रा मुद्गल का 'आंवा' , ममता कालिया का 'बेघर', मन्नू भंडारी का 'महाभोज', कृष्णा सोबती का'दिलो-दानिश', अलका सरावगी का 'कलि कथा वाया बाइपास', उषा प्रियवंदा का 'पचपन खम्भें लाल दिवारें' , प्रभा खेतान का 'पीली आंधी', मैत्रेयी पुष्पा का 'चाक' इत्यादी उपन्यासों में स्त्री-जीवन की त्रासदी के साथ-साथ उनकी बदलती सोच को भी इंगित किया गया है। स्त्री जीवन

www.ghrws.in

Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol.,-05, Issue-I, February 2014

की सबसे बड़ी त्रासदी हैं बलात्कार। बलात्कार से पीड़ित स्त्री के पास आत्महत्या के अलावा कोई और रास्ता शेष नहीं होता है। पुरुष इस हथियार का इस्तेमाल 'ब्रह्मास्त्र' की तरह करता है।इससे शरीर और मन दोनों पर कभी न भरने वाले घाव किए जा सकते हैं - राजेंद्र यादव के मतानुसार - स्त्रीदेह पर काबू पाने का सबसे बड़ा हथियार बलात्कार है - चाहे वह अकेले में परिचितों, अपरिचितों द्वारा उसे बेबस करके किया जाता हो या घरों की सुहागसेजों पर पति परमेश्वर द्वारा बलात्कार व्यक्तिगत और सामाजिक प्रतिशोध भी है - वह घर की इज्जत को खाक में मिलना भी है।

लेखिकाओं ने बलात्कार जैसे संवेदनशील मुद्दे पर उपन्यासों के माध्यम से स्थिति का अन्वशेषण तथा विश्लेषण किया है।कृष्णा सोबती की 'सूरजमुखी अँधेरे के 'नाबालिक लड़की पर बलात्कार का मुद्दा उठाता है तो प्रभा खेतान की 'छिन्नमस्ता' अपने ही सगे भाई द्वारा बालयौन शोषण को सामने लाता है। उषा प्रियवंदा का 'अन्तर्वंशी' वैवाहिक बलात्कार की समस्या पेश करता है तो 'इदन्नमम' में मैत्रेयी जी ने बीमार मंदा तथा 'अल्मा कबूतरी' में अल्मा के बलात्कार के प्रसंग गढ़े। सभी स्थितीयों में पीड़ित स्त्री बलात्कार के भयानक सच से उबरकर फिर खड़ी होती है। बलात्कार के दुरानुभव में सिमटकर वह दम नहीं तोड़ती बल्कि बलात्कृत होने की पीड़ा उसमें बेहतर भविष्य जीने की लालसा बढ़ाती है - रत्ती, प्रिया, बान, अल्मा, मंदा जैसी नायिकाएँ मृत्यु का वरण नहीं जीवन के शरण में जाती हैं - इदन्नमम उपन्यास में मंदा का बलात्कार होने की बात कुसुमा भाभी को पता चलती है तब मन्दा के जख्म पर महरम लगाते हुए वह कहती है -

''जो तुमने किसा ही नहीं उसका दोस अपने ऊपर क्यो ले रही हो?..... तुम पाथर न बनो। नोने हँसो, खेलो । हौसला रखो, हिम्मत से जिया। वैसे ही जैसे अब तक रही हो । अपनी जिन्दगानी के सही -गलत का निरनय तो हमें ही लेना है बिन्नू । काट फेंको जीवन से इस कुघडी को। तुम अच्छत हो मन्दा।"

कुसुमा भाभी की मन्दा को दी गई सलाह समस्त स्त्री जाति का आह्वावान करती है कि वे हौसले और हिम्मत से अपना निर्णय ले, जिस कुकर्म में उनकी मर्जी नहीं थी उसकी सजा उनकी नहीं

www.ghrws.in

Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol.,-05, Issue-I, February 2014

है। एक बुरे सपने की तरह सब कुछ भूलकर उन्हें आगे बढ़ना चाहिए । महिला लेखन से जुडी प्रत्येक साहित्यिक विधा में संघर्ष का जुनून ' है तो पीड़ा का मार्मिक चित्रण भी।

लेखिका शशिप्रभा शास्त्री के 'अमलतास', 'परछाइयाँ', 'कर्करेखा', 'मीनारें' इत्यादी उपन्यासों में स्त्री-जीवन की अपेक्षाओं एवं अवमाननाओं के साथ -साथ पुरुष से उसके जुड़ाव का चित्रण प्रमुखता से हुआ है। मन्नु भंडारी कृत 'आपका बंटी' स्त्री-पुरुष संबंधो की जोड़-तोड़ में आधुनिक जीवन की दिशा निर्धारित करता प्रतीत होता है। ममता कालिया का 'बेघर' उपन्यास 'यौनशुचिता' व 'कौमार्य' को लेकर स्त्री-पुरुष के लिए विरोधाभासी सामाजिक दृष्टिकोण को केन्द्र में रखकर लिखा गया है। मृदुला गर्ग के उपन्यास अनित्य एवं कठगुलाब में आधुनिक नारी-चेतना को बृहद कथाफलक पर अंकित किया गया है। मंजुल भगत के उपन्यास जैसे 'अनारो', 'तिरछी बौछार', 'टूटा हुआ इन्द्रधनुष' में आधुनिक नारी का चित्र है जिसमें परंपराओं के प्रति लगाव है तथा आधुनिकता का मोह भी। नये पुराने का द्वंद उनकी कथाओं में ओर छोर बिखरा है। नासिरा शर्मा की शाल्मली तथा ठीकरे के मँगनी आधुनिक भारतीय नारी पर लिखे उपन्यास है। 'शाल्मली' की नायिका 'शाल्मली' धीर-गंभीर एवं परिवार के प्रति आस्थावान है। 'ठीकरे की मँगनी' की नायिका 'महरुख' साथी पुरुष की अवहेलना के बाद समाजसेवा को जीवन का लक्ष्य बना लेती है।चित्रा मुद्गल के उपन्यास 'जमीन अपनी' तथा 'आवा' महानगरीय प्रतियोगिता तथा स्त्री की 'भोग्या' वाली तस्वीर से दो-चार होने वाले कथानक हैं। इन उपन्यासों के केंद्रीय स्त्री पात्र संघर्ष एवं मूल्यदर्शी चेतना के साथ आगे बढ़ती हैं। मन्नू भंडारी का महाभोज, नासिरा शर्मा का 'जिन्दा मुहावरे' मंजूर एहतेशाम का 'सूखा बरगद' मुख्य रुप से राजनीतिक दाँचपेंच पर लिखा गया है। सांप्रदायिकता जातिवाद, भाषावाद जैसे राजनीतिक बखेड़ों को उपन्यास के केंद्र में रखा गया है। मृणाल पांडेय का 'पटरंगपुर पुराण', प्रभा खेतान का 'पीली आँधी', अलका सरावगी का 'कलिकथा वाया बाइपास' उपन्यास कई पीढ़ियों के द्वंद्व तथा, समुदाय विशेष के सामाजिक, आर्थिक धार्मिक तथा सांस्कृतिक ढाँचे को प्रस्तुत करता है।

www.ohrws.in

Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol.,-05, Issue-I, February 2014

आज स्त्री के पास अपना दृष्टिकोण है। वह अनुभव से सीखती है और नए-नए संदर्भो में उसे परखती है। सेक्स, प्रेम, विवाह उसके लिए सब कुछ नहीं है। उससे आगे बढ़कर वह आर्थिक आत्मनिर्भरता, राजनैतिक जवाबदेही को स्वीकार कर रही है। स्त्री का संसार व्यवसाय, लेखन पत्रकारिता, चिकित्सा, प्रशासनिक सेचा, बँकींग, फिल्म एवं फैशन जैसे प्रतिष्ठित कार्यो से लेकर छोटे- मोटे घरेलू व्यवसायों तक फैला है। वह अपनी विपदाओं की ही नहीं सफलताओं की भी कहानी कहना चाहती है।

वर्तमान समय में नारी ने लंबी छलाँग लगाई है। उसकी विकास यात्रा ने समाज के परंपरागत रुप को बदला है। पति परमेश्वर, घर एक मंदिर, बेटों की माँ, आदर्श बहु, सर्वगुण संपन्न पत्नी इत्यादी उपाधियों को स्त्री नकार रही है। सहनशीलता का सदियों पुराना मार्ग छोड़कर वह अपने मर्जी से जीना चाहती है और इसके लिए उसे जिस आत्मनिर्भरता की आश्यकता है, उसे पाने का प्रयास भी कर रही है। यह सब संभव हो पाया है क्योंकी स्त्री ने आत्मभिव्यक्ति को महत्व दिया है - महादेवीजी ने कहा था -'' युगों से पुरुष स्त्री को उसकी शक्ति के लिए नहीं सहनशक्ति के लिए दंड देता आ रहा है।'' इस सत्य को प्रचारित करने में शिक्षा तथा मिडिया ने प्रमुख भूमिका निभाई है। राजनैतिक अधिकार तथा कड़े कानून बनाने की वजह से स्त्री की भी हिम्मत बढ़ी है। ३३ प्रतिशत आरक्षण ने स्त्री के रास्ते और आसान किए हैं।स्त्री का अतीत चाहे जितना अंधकारमय रहा हो, उसका भविष्य असीम संभावनाओं से हुआ है।

संदर्भ:-

१. अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य : सं.राजेंद्र यादव, अर्चना वर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं. -२००१, पृ.१९२
२. हिन्दी साहित्य की भूमिका : हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - २००६, पृ. १२३
३. धर्म और समाज : डॉ. राधाकृष्णन्, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली तृतीय सं.- १९६३, पृ. १३

www.ghrws.in

Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol.,-05, Issue-I, February 2014

४. नारी चिंतन : नई चुनौतियाँ, डॉ.राजकुमारी गडकर, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर - २००४, पृ. १२

५. कीर्ति चौधरी की कहानियाँ : कीर्ती चौधरी, आर्य प्रकाशन मंडल दिल्ली-२००४, पृ. ४

६. मृदुला गर्ग के कथासाहित्य का मूल्यांकन : ग.राजू बागलकोट, अमन प्रकाशन, कानपुर-२००६, पृ. ३

७. नारी चिंतन : नई चुनौतियाँ, डॉ.राजकुमारी गडकर, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपूर-२००४, पृ. ३२

८. चर्चित कहानियाँ : चित्रा मुद्गल (मामला आगे बढ़ेगा अभी) , सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली-२००४, पृ. १२२

९. एक इंच मुस्कान : राजेंद्र यादव, मन्नू भण्डारी, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली-२००४, पृ. ११८

१०. छिन्नमस्ता : प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली - १९९३, पृ. २१७

११. चित्तकोबरा : मृदुला गर्ग, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस दिल्ली, सं.-१९७८, मेरी तरफ से - लेखिका, पृ.X

१२. कठगुलाब : मृदुला गर्ग, भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली, द्वि.सं. - १९७८, पृ. २२०

१३. नई सदी की पहचान : श्रेष्ठ महिला कथाकार,स. ममता कालिया, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र.सं. -२००२, भूमिका पृ. IX

१४. सूरजमुखी अँधेरे के : कृष्णा सोबती, राजकमल पेपर बैक्स -२००८, पृ. १४१

१५. सृजन संदर्भ : त्रैमासिक पत्रिका जुलाई-सितंबर - २००८, सं. सतीश पांडेय, संजीव दुबे, लेख : स्त्री की भावनात्मक अस्तित्व की लड़ाई का दस्तावेज - राजम नटराजन पिल्लै, मुंबई, पृ. ७४

१६. हंस : मासिक पत्रिका, सितंबर-२००४, सं. लेख - राजेन्द्र यादव, पृ. ३

१७. इदन्नमम : मेत्रेयी पुष्पा, राजकमल पेपर बैक्स, द्वि.सं. - २००४, पृ. १०८

१८. जीवन की तनी डोर ये स्त्रियाँ : नीलम कुलश्रेष्ठ, मेघा बुक्स, दिल्ली, प्र.सं.-२००२, पृ. १२७

१९.१९) अनभै: त्रैमासिक पत्रिका अप्रैल-जून, २००८, सं. लेख, रतनकुमार पाण्डेय पृ. ४

ISSN 976-9714

www.gjmws.in

Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol,-05, Issue-I, February 2014

२०. २०) हिन्दी आलोचना : विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चौथी आवृत्ति १९९९ पृ. १८५

२१.२१) सामान्य मनोविज्ञान : एस. एस. माथुर, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, पंचम सं., १९७२, पृ. १६७

२२. वही, पृ. १९३

२३. २२) हिन्दी उपन्यास : डॉ. शिवनारायण श्रीवास्तव, सरस्वती मंदिर, जतनबर वाराणसी, संस्करण-१९६८, पृ. २३७

२४. वही, पृ. २३७

२५. २३) शेखर एक जीवनी, भाग द्वितीय, अज्ञेय, सरस्वती प्रेस बनारस, पांचवाँ संस्करण-१९६१, पृ. २०८

२६. २४) शेखर एक जीवनी, विविध आयाम, सं.डॉ. रामकमल राय, लेख शेखर के विद्रोह का स्वरुप : चंद्रकांत बांदिवडेकर, अभिव्यक्ति प्रकाशन, द्वि.सं.-१९९८, पृ. ३५

२७. २५) प्रेमचंद साहित्य एवं संवेदना : सं.पी. वी. विजयन, जवाहर पुस्तकालय मथुरा, लेख : पी.वी.विजयन, जवाहर पुस्तकालय मथुरा, लेख : प्रेमचंद की औपन्यासिक कला, पुनर्मूल्यांकन के संदर्भ, चंद्रकांत बांदिवडेकर, सं.-२००५, पृ. ५८

www.ghrws.in